

- अशर्फियाँ लुटें, कोयलों पर मुहर = कम मूल्यवान या कम उपयोगी वस्तुओं, बातों पर ध्यान देना तथा अधिक मूल्यवान या उपयोगी वस्तु या बात की उपेक्षा करना।
- आँख का अंधा गाँठ का पूरा = धनी पर मूर्ख अथवा किसी वस्तु का दोष न देखकर लोगों के कहने पर अधिक मूल्य देने वाला (ग्राहक)।
- आए थे हरिभजन को,
ओटन लगे कपास = वास्तविक उद्देश्य को छोड़कर उससे भिन्न कम महत्वपूर्ण कार्य में लग जाना।
- आगे कुआँ पीछे खाड़ = दोनों ओर से विपत्ति होना, असमंजस की स्थिति।
- आगे नाथ न पीछे पगहा = हर तरह के नियंत्रण से रहित होना, स्वच्छंद जीवन बिताना।
- आदमी जानिए बसे, सोना
जानिए कसे = आदमी का गुण-दोष साथ में रहने से तथा सोने का पता कसौटी पर कसने से चलता है।
- आम के आम गुठलियों के दाम = वह कार्य जिसमें दुगना लाभ प्राप्त करने की स्थिति हो।
- आम खाने से काम है या
पेड़ गिनने से = अपने प्रयोजन से संबंधित कार्य करना चाहिए, व्यर्थ या फालतू की बातों में पड़कर समय नष्ट नहीं करना चाहिए।
- आसमान से गिरा खजूर में अटका = किसी कार्य में सफलता के नजदीक पहुँचने पर भी कोई छोटी सी बाधा या विघ्न आने पर कार्य का रुक जाना।
- ईंट की लेनी, पत्थर की देनी = शठ के साथ शठता का व्यवहार करना उचित है, बदला चुकाना।
- उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे = अपनी गलती न मानकर गलती रोकने वाले पर क्रोध करना (धृष्टता करना)।
- ऊँची दूकान फीका पकवान = किसी व्यक्ति, वस्तु आदि का बाहरी दिखावा, अकर्षण आदि तो बहुत अच्छा पर व्यवहार या गुण घटिया।
- ऊँट के मुँह में जीरा = किसी वस्तु का आवश्यकता से बहुत कम होना।
- एक अनार सौ बीमार = वस्तु अल्प पर उसे पाने की इच्छा वाले बहुत अधिक अर्थात् किस किस को दी जाए।
- एक तो करेला दूसरे नीम चढ़ा = स्वाभाविक दोष का खराब संगति से और अधिक बढ़ जाना।